



भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान

जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर - 208 002

(उत्तर प्रदेश)

An ISO 9001:2015 Certified

(O) : (0512) 2533560, 2554746

Fax : (0512) 2533560, 2554746

Website : <http://atarik.res.in>

E-mail : zpdicarkanpur@gmail.com

Date 31-10-2020

फसल अवशेष प्रबंधन पर वेबिनार

दि. 28-10-2020 को सी.आर.एम. प्रोजेक्ट के अन्तर्गत फसल अवशेष प्रबंधन पर वेबिनार का आयोजन किया गया। इसकी जानकारी भाकृअनुप-अटारी निदेशक डा. अतर सिंह ने दी , वेबिनार में 200 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया। वेबिनार में मुख्य अतिथि डा. ए.के. सिंह उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) भाकृअनुप नई दिल्ली, रहे।

मुख्य अतिथि डा. ए.के. सिंह उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) भाकृअनुप नई दिल्ली ने वेबिनार में सब का स्वागत किया और सभी विशेषज्ञों के सुझावों को सुना। किये गये कार्यों का वीडियो केवीके के पोर्टल पर लगाया जाये तथा सफल तकनीकी को किसानों को अवगत कराया जाए। साथ ही किसानों को पराली जलाने के नुकसान व फायदे के बारे में जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से दी जाए। मशीनों के प्रबन्धन से इसको जमीन के अन्दर मिलाकर कार्बन की मात्रा बढ़ाने के साथ ही जल संरक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। किसानों को इसके परिणामों को भ्रमण के दौरान दिखाया जाए। कृषि प्रसार के माध्यमों से ज्यादा किसानों को जागरूक किया जाये इसके कार्य में पंजाब , हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 63 जिलों काम कर रहे हैं तथा मृदा के स्वास्थ्य की जाँच बहुत जरूरी है।

अटारी निदेशक डा. अतर सिंह ने मुख्य अतिथि सहित सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भारतवर्ष में गेहूँ के अन्तर्गत 29.14 मि०/हेक्टेयर क्षेत्रफल है तथा धान में 43.79 मि०/हेक्टेयर क्षेत्रफल है। अतः पराली किसान गेहूँ की फसल शीघ्र करने के बाद बोना चाहते हैं। अतः वे पराली जलाते हैं। अगर पराली को जमीन में मिला दिया जाये तो जमीन की जलधारण क्षमता बढ़ेगी , जमीन के नत्रजन की मात्रा बढ़ेगी , प्रदूषण कम होगा, खरपतवार नियंत्रण होगा, पैदावार की लागत घटेगी व पैदावार बढ़ेगी, ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन कम होगा।

डॉ. राजवीर सिंह निदेशक अटारी लुधियाना ने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के परिदृश्य में कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में पिछले कुछ वर्षों में 70 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। यदि रोकने के प्रयास न किये गये तो कुछ ही वर्षों में सवा दो गुना से ज्यादा इजाफा हो सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ा है। डा. राजवीर सिंह ने बताया कि किस प्रकार हैप्पल सीडर , सुपर सीडर, मल्चर, बेलर, चाँपर इत्यादी मशीनों के माध्यम से फसल अवशेषों का प्रबंधन करके जमीन की उत्पादक क्षमता बढ़ाई जा सकती है तथा वायु प्रदूषण में कमी भी की जा सकती है।

डा. वी.पी. शर्मा निदेशक डी.एम.आर. शिमला ने बताया कि किस तरह 25 प्रकार के मशरूमों का उत्पादन धान के तना के माध्यम से कर के धन अर्जित करने के साथ फसल अवशेष प्रबंधन भी किया जा सकता है। मशरूम एक अच्छा पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ ही विटामिन डी की उपलब्धता करता है।

डॉ. पी.एन. द्विवेदी (आई.जी.एफ.आर.आई. झांसी) ने बताया कि धान के स्ट्रा को पशुओं के चारा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है व अन्य चारों के साथ इसको प्रयोग में लाया जाता है।

डा. वाई.वी. सिंह प्रधान वैज्ञानिक आई.ए.आर.आई नई दिल्ली ने फसल अवशेष प्रबंधन हेतु पूसा डीकम्पोस कैप्सूल का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि 15 दिनों के भीतर धान के अवशेषों के पूसा डीकम्पोजर प्रबंधन कैप्सूल से अवशेष प्रबंधन किया जा सकता है। कैप्सूल की प्रयोग विधि के बारे में चर्चा की। यह कैप्सूल 5 रु प्रति कैप्सूल के मूल्य पर उपलब्ध है। साथ ही कैप्सूल पर अनुसंधान का सुझाव दिया।

सहायक महानिदेशक डॉ. रणधीर सिंह ने फसल अवशेष प्रबंधन के लिये विभिन्न प्रकार की मशीनों का सुझाव दिया। सभी गतिविधि बहुत अच्छी है , पूसा डीकंपोजर फसल अवशेषों के प्रबंधन का बहुत अच्छा विकल्प है, लेकिन विभिन्न प्रकार के वार और क्षेत्रवार योजना बनाना बहुत जरूरी है।

सहायक महानिदेशक डॉ. वी.पी. चहल ने सभी को बहुत अच्छी प्रस्तुति और गतिविधि के लिए धन्यवाद दिया, इस परियोजना में जागरूकता बढ़ाने के लिये मेला, पोस्टर, नुक्कड़ नाटक और अन्य गतिविधि केवीके और अन्य संगठन द्वारा की जानी चाहिए। साथ ही मास्टर ट्रेनर्स विकसित करने पर बल दिया , सफलता की कहानियाँ अन्य किसानों के साथ जानकारी देने की बात की। वीडियो व ऑडियो के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराने पर बल दिया।

एक्सपर्ट पैनल में सहायक महानिदेशक डा. वी.पी. चहल एवं डा. रणधीर सिंह , डा. राजबीर सिंह निदेशक अटारी लुधियाना , डा. वाई.वी. सिंह प्रधान वैज्ञानिक आई.ए.आर.आई नई दिल्ली , डा. वी.पी. शर्मा निदेशक डी.एम.आर. शिमला, डा. विजय कुमार यादव निदेशक आई.जी.एफ.आर.आई. झांसी , आयोजन सचिव एवं अटारी कानपुर निदेशक डा. अतर सिंह उपस्थित रहे। अलग-अलग तकनीक और गतिविधि के माध्यम से फसल अवशेष प्रबंधन की कार्य योजना और पूरे देश में फसल अवशेष प्रबंधन के माध्यम से किस प्रकार लाभ प्राप्त किया जा सके इस पर चर्चा हुई। अन्त में डॉ. राघवेंद्र सिंह ने सभी प्रतिभागी और विशेषज्ञ सदस्यों को धन्यवाद फसल अवशेष प्रबंधन पर महत्वपूर्ण सुझाव देने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।



भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर - 208 002
(उत्तर प्रदेश)
An ISO 9001:2015 Certified

(O) : (0512) 2533560, 2554746
Fax : (0512) 2533560, 2554746
Website : <http://atarik.res.in>
E-mail : zpdicarkanpur@gmail.com

Webinar on Crop Residue Management Organized by ICAR-ATARI, Kanpur

On 28th October 2020, ICAR-ATARI, Zone III organized a webinar meeting on Paddy Residue management by different technologies in the chairmanship of Dr. A.K Singh DDG (AE), Dr. V.P. Chahal and Dr. Randheer Singh ADGs (AE) were present as expert, in this meeting more than 200 scientist taken part. Chief Guest Dr. A.K. Singh, Deputy Director General (Agricultural Extension) ICAR New Delhi welcomed everyone to the webinar and suggested. Videos of the work done should be put on the KVK portal and the successful technology should be conveyed to the farmers, he stated about the disadvantages of burning residue of Paddy straw through Krishi Vigyan Kendras. This is managed by machines, the water conservation can be increased and adding carbon in the soil. Its result should be shown to the farmers during exposure visits. In order to make more farmers aware for beneficial results. Under crop residue management 63 districts KVKs of Punjab, Haryana and western Uttar Pradesh are working in this work and soil health analysis is very important.

Dr. Rajveer Singh Director ICAR-ATARI, Ludhiana gave presentation on some machine like Happy Seeder, Supper Seeder, Mulcher, Baler, Chopper etc., the added advantage on soil productivity increase, Reduction in air pollution & cost of cultivation, Suppressing the weeds and enhancing the crop yield. The other activities to popularize the technologies.

Dr. V.P Sharma Director, DMRS explained how 25 types of mushroom can be cultivated on paddy residue and the mushroom having medicinal value for nutritional security, rich source of vitamin D and Employment generation at the village level to the youths and house hold women can grow mushroom, it needs small area and making profitable venture. The mushroom intake in India is very poor that is 0.15 kg/head/year. The different kind of mushroom and methods he discussed.

Dr. P.N Dwivedi, PS IGFRI Jhansi given presentation on manage the Paddy Straw for feeding to the Animals round year fodder through different technology like silage, straw and method of storage Paddy Residue baling and **densifying** and making fodder bank in different storage structures.

Dr. Y.V Singh Principle Scientist IARI given thoughts on management of Paddy Residue through Pusa Decomposer capsules, Dr. Singh talk on Pusa Decomposer by which management of Paddy residue and other crops within 15 Days, production of Pusa Decomposer capsuls MoU Signed with 6 companies. He has given the use of technologies, 4 capsuls or 25 liter liquid for one ha area. The material available at IARI New Delhi. The cost of 4 capsul is Rs. 20 & liquid cost is Rs. 20/liter.

Mr. Anand Shrivastav (Company) has provided some information regarding Farmers precautions in using the Pusa Decomposer at field level.

Dr. Randhir Singh Expert Pannel has Suggested planning of the crop residue management by all technologies are good, pusa Decomposer is very good option of the management of crop residue but planning variety wise and region wise. The residue incorporating time is 20-25 days only. The combine harvesting field sowing by happy seeder, for ex-situ management who is the buyer the strategy should be in complete chain. The residue 100% management or up to what extent be clarified to the farmers.

Dr. V.P Chahal appreciated the presentations of all scientist. The awareness progremme i.e; Kisan Mela, Posters, Nukkad Natak, Prabhat pheries and other activities should be done by the KVKs and other organizations. The reduction in burning cases in past, this year burning started early hence round the year skill training by KVKs experts with cooperative farmers. There is need to Develop master trainers with responsive farmers for diversification of cropping system & success stories, videos & audios should be shared to others.

Dr. Raghwendra Singh thanks to all participants and experts for management of crop residue.

